समावे आप में शंकर, तभी सुख रूप होता है |
अरे नर ध्यान धर घट में, व्यर्थ क्यू जनम खोता है ||

अरे नर ध्यान धर घट में, व्यर्थ क्यू जनम खोता है |
विषय के झूल झूले में , क्यों दुःख के बीज बोता है || टेर ||

गया तू भूल चेतनता, प्रपंची बन गया जग में |
न जाने देह को नश्वर, सदा सुख नींद सोता है || १ ||

सदा सत्संग कर प्यारे, दमन कर पंच विषयो का |
सजग हो आत्म चिंतन में, समय सम्पूर्ण होता है || २ ||

शरण गुरुदेव की रहकर, श्रवण कर सत्य शिक्षा को |
बने आतम तभी निर्मल, अभय पद प्राप्त होता है || ३ ||

अविध्या भाव तब नाशे, लखे चहू और अमृत को |
समावे आप में शंकर, तभी सुख रूप होता है || ४ ||

जय श्री नाथ जी की